एक मायावी शांति

लेखक- सी. उदय भास्कर (निदेशक, सोसायटी फॉर पॉलिसी स्टडीज, नई दिल्ली)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

11 सितम्बर, 2019

"नीतिगत लापरवाही और राजनीतिक असंगतता की मात्रा आतंक पर अमेरिका के नेतृत्व वाले वैश्विक युद्ध (GWOT) के पिछले 18 वर्षों को चिह्नित करता है, हालांकि अब यह संक्षिप्त रूप से प्रचलन में नहीं है।"

9/11 की त्रासदी की 18वीं वर्षगांठ की परिकल्पना अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नेतृत्व में एक लंबे समय से चले आ रहे युद्ध के विजयी समापन के रूप में की गई थी। अक्टूबर, 2001 में शुरू हुआ युद्ध खून-खराबे में तब्दील हो गया और इसमें 2,400 से अधिक अमेरिकी कर्मियों और लगभग 900 नाटो देशों के सैनिकों को अपनी जान गंवानी पड़ी, साथ ही हजारों असहाय अफगान नागरिक भी इस युद्ध में मारे गये। ऐसा अनुमान है कि मारे गये स्थानीय अफगानों की संख्या 1, 00,000 के करीब होगी। कुछ अमेरिकी अधिकारियों को व्हाइट हाउस और तालिबान के बीच अंतिम सौदे के विवरण का पता था, लेकिन कैंप डेविड में रविवार (8 सितंबर) को राष्ट्रपति ट्रम्प और तालिबान नेताओं के बीच एक गुप्त बैठक द्वारा इसे अंजाम दिया जाना था। अगर हम इतिहास पर ध्यान दें तो पाएंगे कि अमेरिकी राजधानी के बाहर इस स्थल ने मिस्र और इजरायल के बीच ऐतिहासिक 1978 के गुप्त शांति समझौते की मेजबानी की थी।

हालांकि, शनिवार (7 सितंबर) को राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा ट्वीट्स की एक श्रृंखला के माध्यम से कहा गया कि काबुल में एक हमला, जिसमें हमारा एक सैनिक और 11 अन्य लोग मारे गये, के बाद बैठक रद्द कर दी गयी है और शांति वार्ता बंद कर दी गयी है।

नीतिगत लापरवाही और राजनीतिक असंगतता की मात्रा आतंक पर अमेरिका के नेतृत्व वाले वैश्विक युद्ध (GWOT) के पिछले 18 वर्षों को चिह्नित करती है। हालांकि, अब यह संक्षिप्त रूप से प्रचलन में नहीं है। सितंबर, 2001 में 9/11 की भयानक घटना और न्यूयॉर्क में ट्विन टावर्स के प्रतीकवाद के ध्वस्त होने के बाद अमेरिका को सार्वभौमिक समर्थन और सहानुभूति मिलने लगी थी और यह उम्मीद की जा रही थी कि वैश्विक संकल्प का यह स्तर अफगानिस्तान में अलकायदा और उसके तालिबानी समर्थन के आधार को तेजी से नष्ट कर देगा।

हालांकि, व्हाइट हाउस द्वारा अपने उद्देश्य और लक्ष्य में एक भयानक बदलाव के क्रम में कई विफल नीतियों पर प्रभाव पड़ा, जब अमेरिका ने अपना ध्यान 2003 की शुरुआत में अफगानिस्तान से इराक की ओर स्थानांतरित कर दिया। इसके बाद, थोड़ी जवाबदेही या यह कहें कि यथोचित रूप से अच्छी तरह से परिभाषित राजनीतिक-सैन्य उद्देश्यों के साथ बहुत जल्द ही बहुमूल्य मानव जीवन और काफी धन खर्च किया जाने लगा। अमेरिकी सैनिकों को या तो अपना जीवन गँवाना पड़ा या अपाहिज होना पड़ा। इसके अलावा, मीलों दूर किसी और की धरती पर अमेरिकी नागरिकों के कर पर युद्ध करना कहीं से उचित प्रतीत नहीं होता है।

भले ही अंतिम समय में अमेरिका-तालिबान सौदे के खत्म होने पर विश्व स्तर पर (पाकिस्तान को छोड़कर) राहत मिली हो, लेकिन यह बात समझ से परे है कि इस युद्ध में हजारों लोगों के मारे जाने के बाद, एक अमेरिकी सैनिक की मौत के कारण इस सौदे को खत्म करना कहाँ तक उचित है, क्योंकि इससे पहले हजारों लोगों के मारे जाने के बाद भी यह कदम नहीं उठाया गया था। तालिबान को बातचीत की मेज पर लाने के लिए अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि जलमय खलीलजाद ने महीनों का समय लगाया

था और ट्रम्प के सौदे पर आने के दृढ़ संकल्प को भी अमेरिकी राष्ट्रपति के 2020 के चुनाव अभियान की रणनीति से जोड़ा गया।

तो फिर सवाल उठता है कि तालिबान के साथ यह सौदा अंतिम समय पर खत्म क्यों किया गया? इसके कई कारण हों सकते है, जिनमें से एक यूएस नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर जॉन बोल्टन और विदेश विभाग के बीच व्याप्त अंतर शामिल हैं।

नौ हस्ताक्षरकर्त्ता (जेम्स डोबिन्स, रॉबर्ट पी. फिन, रोनाल्ड ई. न्यूमैन, विलियम वुड, जॉन नेग्रोपोंटे, अर्ल एंथनी वेन, रेयान क्रोकर, जेम्स कनिंघम और ह्यूगो लॉरेंस) अमेरिकी नीति के लिए सावधानी बरतने और निष्कर्ष निकालने के लिए एक प्रेरक मामला बनाते हैं: यह महत्वपूर्ण है कि संयुक्त राज्य अमेरिका स्पष्ट करता है कि पूर्ण वापसी निश्चित तारीखों पर नहीं होगी, लेकिन इसके विपरीत, एक वास्तविक और स्पष्ट रूप से परिभाषित शांति के समापन की आवश्यकता होगी।

अफगानिस्तान में एक स्थायी और सतत् शांति समझौता मायावी बना हुआ है और यह मुख्य रूप से आदिवासी समाज में कई बड़ी गलतियों का प्रतिबिंब है जिसे महान शक्ति प्रतिद्वंद्विता, क्षेत्रीय पूर्णता और आंतरिक जातीय-भाषाई दरार द्वारा तबाह कर दिया गया है।

1979 में शीत युद्ध के दौरान अफगानिस्तान पर सोवियत कब्जे और अमेरिकी-पाकिस्तानी सांठ गांठ के कारण धार्मिक उकसावे ने अफगान मुजाहिद्दीन को जन्म दिया, जिसके बाद एक ओसामा बिन लादेन सामने आया, जिसके एक हाथ में कलाश्निकोव राइफल और दूसरे में कुरान था।

इसने जिहादी हिंसा के राजनीतिक समर्थन की शुरुआत को चिह्नित किया, जो बाद में आतंकवाद में बदल गया। इसने 1990 के दशक की शुरुआत में अमेरिकी परिसंपत्तियों पर हमला करना शुरू किया, जिसने तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को अफगानिस्तान में आतंकी शिविरों के खिलाफ टॉमहॉक क्रूज मिसाइलों का उपयोग करने के लिए उकसाया, हालांकि इससे बहुत कम फायदा हुआ।

इतिहास हमें यह याद दिलाता है कि कट्टरपंथी विचारधारा, जो 9/11 से शुरू हुई थी और अलकायदा से जुड़ी थी, सितंबर 2001 से पहले आई थी और 1990 के दशक की शुरुआत में भारत भी इस इस्लामिक आतंकी वायरस से पीड़ित हो चुका था।

दिसंबर, 1999 में भारत पर आतंकी सरगना मसूद अजहर को रिहा करने के कलंक के बाद, दिसंबर, 2001 में भारतीय संसद पर हमले हुए जो हमारी सुरक्षा में व्याप्त चुनौतियों की एक कड़ी की याद दिलाता है।

तालिबान की वापसी भले ही अभी टल गई हो, लेकिन असहाय अफगान नागरिकों के लिए आगे का रास्ता कष्टदायी और खतरनाक बना हुआ है। क्या ट्रम्प के अगले ट्वीट में अमेरिकी नीति का अनावरण किया जाएगा?

GS World टीम...

अमेरिका-अफगानिस्तान युद्ध

चर्चा में क्यों?

- अफगानिस्तान में शांति को लेकर अमेरिका और तालिबान में हो रही बातचीत पर पूर्णविराम लगता दिख रहा है।
- राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि इस आतंकी संगठन के साथ लंबे समय से चल रही बातचीत बिना किसी नतीजे पर पहुंचे ही खत्म हो गई।
- इस बातचीत का अंत अफगानिस्तान से अमेरिकी सैनिकों की वापसी के साथ होना था। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'जहां तक मेरा सवाल है, वो (बातचीत) दफन हो चुकी है।'?
- इस फैसले की वजह से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में तालिबान द्वारा किए गए एक हमले को बताया गया है, जिसमें इस हमले में एक अमेरिकी सैनिक सहित 12 लोगों की मौत हो गई थी।
- अमेरिका की ओर से राजनयिक जलमय खलीलजाद अभी तक तालिबान के साथ नौ दौर की वार्ता कर चुके हैं। लेकिन डोनाल्ड ट्रंप की इस घोषणा के बाद साल भर से जारी इस वार्ता पर विराम लगता दिखाई दे रहा है।

पृष्ठभूमि

- तालिबान का उदय 90 के दशक में उत्तरी पाकिस्तान में तब हुआ जब अफगानिस्तान से सोवियत संघ की सेना वापस जा रही थी। पश्तूनों के नेतृत्व में उभरा तालिबान, अफगानिस्तान के परिदृश्य पर 1994 में सामने आया।
- माना जाता है कि तालिबान सबसे पहले धार्मिक आयोजनों या मदरसों के जरिये उभरा जिसमें ज्यादातर पैसा सऊदी अरब से आता था।
- सोवियत संघ के अफगानिस्तान से जाने के बाद वहाँ कई गुटों में आपसी संघर्ष शुरू हो गया था और मुजाहिद्दीनों से भी लोग परेशान थे।
- ऐसे हालात में जब तालिबान का उदय हुआ तो अफगान लोगों ने उसका स्वागत किया था।
- प्रारंभ में तालिबान को इसलिये लोकप्रियता मिली क्योंकि उन्होंने भ्रष्टाचार पर लगाम लगाया, अव्यवस्था पर अंकुश लगाकर अपने नियंत्रण में आने वाले इलाकों को सुरक्षित बनाया ताकि लोग व्यवसाय कर सकें।
- दक्षिण-पश्चिम अफगानिस्तान में तालिबान ने जल्द ही अपना प्रभाव बढ़ाया। सितंबर 1995 में तालिबान ने ईरान सीमा से लगे हेरात प्रांत पर कब्जा कर लिया।
- धीरे-धीरे तालिबान पर मानवाधिकार उल्लंघन और सांस्कृतिक दुर्व्यवहार के आरोप लगने लगे।
- 2001 में अंतर्राष्ट्रीय आलोचना के बावजूद तालिबान ने विश्व प्रसिद्ध बामियान बुद्ध प्रतिमाओं को नष्ट कर दिया।
- पाक-अफगान सीमा पर पश्तून इलाके के बारे में तालिबान का कहना था कि वह वहाँ शांति और सुरक्षा का माहौल बनाएगा और सत्ता में आने के बाद शरिया कानून लागू करेगा।
- पाकिस्तान और अफगानिस्तान दोनों जगह तालिबान ने या तो इस्लामिक कानून के तहत सजा लागू करवाई जैसे- हत्या के दोषियों को सार्वजनिक फाँसी, चोरी करने के दोषियों के हाथ-पैर काटना।
- दुनिया का ध्यान तालिबान की ओर तब गया जब न्यूयॉर्क में 2001 में हमले किये गए। अफगानिस्तान में तालिबान पर आरोप लगाया गया कि उसने ओसामा बिन लादेन और अल कायदा को पनाह दी है जिसे न्यूयॉर्क हमलों का दोषी बताया जा रहा था।

ट्रंप के फैसले पर संदेह क्यों?

- भले ही डोनाल्ड ट्रंप तालिबान के साथ चल रही वार्ता रोकने के पीछे की वजह काबुल में पिछले सप्ताह हुए हमले को बता रहे हों, लेकिन उनका यह तर्क अधिकांश लोगों के गले नहीं उतर रहा है।
- इसकी वजह यह है कि अमेरिका पिछले एक साल से तालिबान से बात कर रहा है और इस दौरान तालिबान के हमलों में कई अमेरिकी सैनिक और राजनयिक भी मारे गए।
- एक रिपोर्ट के मुताबिक इस साल अब तक तालिबान के हमले में 16 अमेरिकी सैनिक अपनी जान गंवा चुके हैं।
- बीते महीने ही एक हमले में नाटो और अमेरिका के कई अधिकारियों की मौत हुई थी. जानकार सवाल उठाते हुए कहते हैं कि जब साल भर से अमेरिकी सैनिक तालिबान के हमले में मारे जा रहे थे तब अमेरिका ने इस संगठन से बातचीत क्यों नहीं रोकी? ऐसे में अब अचानक एक हमले के बाद डोनाल्ड ट्रंप कर वार्ता को रोकना समझ से परे है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **ग्लोबल वार ऑन टेरेरिज्म के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-**

   1. ग्लोबल वार ऑन टेरेरिज्म यू.एस. सरकार द्वारा आतंकवाद को रोकने के लिए चलाई आ रही एक महत्त्वपूर्ण पहल है।
   2. ग्लोबल वार ऑन टेरेरिज्म की अवधारणा 9/11 के आतंकी हमले के बाद प्रतिपादित हुई।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements regarding the Global War on Terrorism-**

   1. Global War on Terrorism is an important initiative of the government to curb terrorism.
   2. Global War on Terrorism as a concept was Propounded after 9/11 terror attack.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1
   (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2
   (d) None of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: क्या अफगानिस्तान शांति वार्ता से अंतिम समय में अमेरिका का बाहर आना अमेरिका की रणनीतिक भूल है? इस कदम का अफगानिस्तान समेत भारतीय उपमहाद्वीप पर क्या प्रभाव पड़ेगा? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

Q. Is America's exit from Afghanistan peace talks at the eleventh hour a strategic mistake of America? How will this move affect the Indian subcontinent, including Afghanistan? Discuss. (250 Words)

नोट : 10 सितंबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (d) होगा।